श्रीसीतारामाभ्यां नमः

श्रीरामाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

श्रीव्यास उवाच

श्रृणु गाङ्गेय ? वक्ष्यामि रामस्याद्भुतकर्मणः ।
अष्टोत्तरशतं नाम त्रिषु लोकेषु विश्रुतम् ॥१॥

श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमोनमः

आनन्दभाष्यसिंहासनासीन जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य

श्रीरामेश्वरान्दाचार्य

प्रणीत प्रकाश

सीतारामसमारम्भां रामानन्दार्यमध्यमाम् ।
रामप्रपन्नगुर्वन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम् ॥

यह श्रीरामाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र पद्म पुराण के पाताल खण्ड में श्रीव्यासजी एवं श्रीभीष्मपितामह के सम्वाद मे पठित हैं जो श्रीशंकरजी ने श्रीपार्वतीजी को उपदेश दिया है। वही श्रीव्यासजी श्रीभीष्मपितामहजी को कह रहे हैं-

हे गांगेय ? गंगा पुत्र भीष्म ? आप ने श्रीरामजी जो कि लोकोत्तर चमत्कारकारी अद्भुत कर्म करनेवाले हैं उनका स्वर्ग मर्त्य एवं पाताल तीनों लोकों में विश्रुत अष्टोत्तर शतनाम सुनने के लिये इच्छा की ऐसे चमत्कारी शतनामों को कहता हूँ उसे सावधानी से सुनें ॥१॥

कैलाशशिखरे रम्ये नानारत्नविभूषिते ।
एकाग्रप्रयतो भूत्वा विष्णुमाराध्य भक्तितः ॥२॥
उपविष्टस्ततो भोक्तुं पार्वतीं शङ्करोऽब्रवीत् ।
पार्वत्येहि मया सार्धं भोक्तुं भुवनवन्दिते ? ॥३॥
तमाह पार्वतीदेवी जप्त्वा नामसहस्त्रकम् ।
ततोभोक्ष्याम्यहं देव ? भुज्यतां भवता प्रभो ? ॥४॥

नाना प्रकार के रत्नों से विभूषित अति सुन्दर कैलाश पर्वत के शिखर में भक्ति भावना के साथ एकाग्र एवं अति तन्मय तथा पवित्रता के साथ विष्णु-सर्वव्यापक श्रीरामजी की आराधना-पूजापाठ रागभोग आदि से निवृत्त होकर प्रसाद सेवन के लिये उपविष्ट-बैठे श्रीशंकरजी ने श्रीपार्वतीजी से कहा-हे भुवनवन्दिते पार्वती मेरे साथ बैठकर भगवत्प्रसाद सेवन करने के लिये आजाओ ॥२-३॥

श्रीरामप्रसाद सेवनार्थ श्रीशंकरजी के वुलाने पर श्रीपार्वतीदेवीजी ने श्रीशंकरजी को कहा हे देव ? विष्णुसहस्त्र नामों को जप करने के वाद में ही भगवत्प्रसाद का सेवन करुँगी अतः प्रभो ? आप प्रसाद का सेवन करें यानी मेरे श्रीविष्णुसहस्त्रनाम के पाठ में कुछ समय लगेगा अतः आप पालें मैं पाठ करके पीछे पाऊँगी ॥४॥

श्रीशंकर उवाच

ततस्तां पार्वतीं प्राह प्रहसन् परमेश्वरः ।
धन्यासि कृतपुण्यासि विष्णुभक्तासि पार्वति ? ।।५।।

दुर्लभा वैष्णवीभक्तिर्भागधेयं विनेश्वरि ? ।।६।।
राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ।
सहस्त्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ? ।।७।।
रकारादीनि नामानि श्रृण्वतो मम पार्वति ? ।
मनः प्रसन्नतां याति रामनाभिकीर्तनात् ।।८।।

श्रीपार्वतीजी की वात सुनकर हँसते हुये परमेश्वरजी ने श्रीपार्वतीजी को कहा-पार्वति ? तुम धन्य हो पुण्यशाली हो एवं श्रीविष्णुजी की भक्तिवाली हो हे ईश्वरि ? भाग्य के विना श्रीविष्णु भक्ति दुर्लभ है अतः तुम भाग्यशाली हो ।।५-६।।

सुन्दर मुहवाली पार्वति ? मैं सर्वदा मनोरम अत्यन्त मनमोहक श्रीरामजी या श्रीरामनाम में ही राम राम राम इसप्रकार जपता हुआ रमण किया करता हूँ क्योंकि यह एकवार ही जपित श्रीरामनाम श्रीविष्णुजी के हजार नाम जप के वरावर है यानी विष्णुसहस्त्रनाम का पाठ वरावर श्रीरामनाम का पाठ है अतः तुम श्रीरामनाम का जपकर प्रसाद पालो ।।७।।

'राम' इस पूर्ण नाम की तो वात ही पर रहे हे

रमन्ते योगिनोऽनन्ते सत्यानन्दे चिदात्मनि ।

इति रामपदेनासौ परब्रह्माभिधीयते ॥९॥

रामेत्युक्त्वा महादेवि ? भुंक्ष्व सार्धं मयाऽधुना ॥

श्रीव्यास उवाच

ततो रामेति नामोक्त्वा मुक्तवती हि पार्वती॥१०॥

पार्वति ? मेरा तो रकारादि यानी जिस नाम के आदि में 'र' या 'रा' हो रमणलाल या रामलाल ऐसे नामों को सुनते ही श्रीरामनाम के कीर्त्तन की आशंका से मन अति प्रसन्न हो जाता है ॥८॥

"**सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म**" इत्यादि श्रुतियों से वोधित 'सत्य स्वरूप आनन्द स्वरूप अनन्तस्वरूप एवं चिदात्म स्वरूप श्रीराम में योगिजन सर्वदा रमण करते हैं उस श्रीराम पद से दशरथ नन्दन श्रीरामजी ही परब्रह्म शब्द से श्रुतिस्मृति आदि में कहे जाते हैं अतः हे महादेवि ? अभी 'राम' ऐसा कहकर यानी श्रीराम इस नाम का जप करके मेरे साथ बैठकर प्रसाद पालो ॥९-१/२॥

श्रीव्यासजी कहते हैं श्रीशंकरजी से श्रीरामनाम महात्म्य को सुनकर उस तत्त्व से अवगत होकर श्रीपार्वतीजी ने 'राम' इस नाम का जप करके पतिदेव के साथ प्रसाद पा लिया, अनन्तर श्रीराम इस नाम का उच्चारण कर महादेवी श्रीपार्वतीजी श्रीशंभुजी के साथ विराजमान हुई और श्रीरामचन्द्रजी विषयक प्रीति से आप्लावित हृदय होकर

रामेत्युक्त्वा महादेवी शंभुना सह संस्थिता ।
पप्रच्छ शङ्करं देवं प्रीतिप्रवणमानसा ॥११॥

श्रीपार्वत्युवाच

सहस्त्रनामभिस्तुल्यं रामनाम त्वयोदितम् ।
तस्यापराणि नामानि सन्ति चेद् रावणद्विषः ॥१२॥
कथ्यतां मम देवेश ? तत्र मे भक्तिरुत्थिता ।

श्रीमहादेव उवाच

श्रृणु नामानि वक्ष्यामि रामचन्द्रस्य पार्वति ? ॥१३॥

श्रीरामनाम तत्त्व के विशेष जानकारी के लिये श्रीशंकरजी से पूछा ॥१०-११॥

श्रीपार्वतीजी ने कहा-हे मेरे प्राणेस्वर ? आपने एक श्रीरामनाम को सहस्त्र श्रीविष्णु नाम के वरावर कहा तो क्या रावण के शत्रु श्रीरामजी के और भी नाम हैं ? यदि हों तो उन नामों का भी कथन-हमें उपदेश करें क्योंकि श्रीरामनाम के महत्व को जानने के लिये मेरे हृदय में भक्ति जागरित हुई है ॥१२-१/२॥

पार्वतीजी की प्रार्थना सुनकर श्रीमहादेवजी ने कहा हे पार्वति ? श्रीरामचन्द्रजी के नामों को कहता हूँ सुनो 'जगत् सर्वं शरीरं ते' सम्पूर्ण जगत् ही श्रीरामजी का शरीर है इस श्रुति के अनुसार संसार के सभी शब्द श्रीरामचन्द्रजी के वाचक हैं तो सभी नामों का कथन असम्भव प्राय है। फिर भी शास्त्रकारों ने श्रीरामचन्द्रजी के

नामानि रामचन्द्रस्य सहस्त्रं तेषु चाधिकम् ।
तेषु चात्यन्तमुख्यं हि नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥१४॥
विष्णोरेकैकनामैव सर्ववेदाधिकं मतम् ।
तादृङ्नाम सहस्त्रेण रामनाम समं मतम् ॥१५॥
यत्फलं सर्ववेदानां मन्त्राणां जपतः प्रिये ? ।
तत्फलं कोटिगुणितं रामनाम्नैव लभ्यते ॥१६॥
नामानि श्रृणु रामस्य मुख्यानि शुभदर्शने ? ।
ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि ते प्रिये ? ॥१७॥

सहस्त्रनामों को या उससे भी अधिक नामों को प्रधान माना है उनमें भी अत्यन्त मुख्य नाम एक सौ आठ को माना है ॥१३-१४॥

पार्वति ? श्रीविष्णुजी के एक एक नाम सम्पूर्ण वेद से अधिक महत्वशाली माना गया है ऐसे हजार नामों के समान एक श्रीरामनाम माना गया है ॥१५॥

हे प्रिये ? सभी वेदों के मन्त्रों का जप करने से या सभी वेदों के पाठ करने एवं अन्य सभी मन्त्रों के जप करने से जो फल प्राप्त किया जा सकता है उससे कोटि गुणा अधिक फल केवल श्रीरामनाम के जप से ही प्राप्त होता है ॥१६॥

शुभदर्शने ? श्रीरामजी के मुख्य नामों को सुनो प्रिये? जिन जिन श्रीरामजी के नामों को ऋषि-साक्षात्कृत धर्मवाले या वेद मन्त्र तत्त्वों को जिन्होंने देखा या अनुभव

ॐ अस्य श्रीरामचन्द्रस्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्येश्वरऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीरामचन्द्रोदेवता श्रीरामप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

ॐ श्रीरामो रामचन्द्रश्च रामभद्रश्च शाश्वतः ।
राजीवलोचनः श्रीमान् राजेन्द्रो रघुपुङ्गवः ॥१८॥

किया है उन महर्षियों से परिगीत–सर्वदा गीयमान या अनुष्ठित श्रीरामनामों का वर्णन करता हूँ उसे सावधानतया सुनो।१७।

इस श्रीरामचन्द्रजी के अष्टोत्तर शत नामक स्तोत्र के ईश्वर ऋषि हैं अनुष्टुप् छन्द है श्रीरामचन्द्रजी देवता हैं श्रीरामचन्द्रजी की प्रीति–प्रसन्नता हेतु जप के लिये विनियोग किया जाता है ।

ॐ 'रामनाम्नः समुत्पन्नः प्रणवो मोक्षदायकः'

इस महर्षि वाल्मीकिजी के वचनानुसार श्रीरामनाम यानी 'रां' इस बीजाक्षर से उत्पन्न होने से प्रणव ओंकार मोक्ष देनेवाला है अतः वेदमन्त्रों एवं स्तोत्रों के प्रारम्भ में ओंकार का उच्चारण किया जाता है, ये श्रीरामनाम वेद मन्त्र ही हैं अतः इनके प्रारम्भ में ओंकार का पाठ है, यह जप करनेवाले का रक्षक एवं मोक्ष दाता होने से परब्रह्म श्रीरामजी का वाचक है **'रां'** से इसकी उत्पत्ति कैसे होती है उस क्रिया को श्रीवैष्णवमताब्जभाष्कर प्रभृति मेरी अन्य टीकाओं में देखें ।

श्रीरामः=श्रीसीताजी के आश्रयभूत या श्रीसीताजी से

जानकीवल्लभो जैत्रो जितामित्रो जनार्दनः ।
विश्वामित्रप्रियो दान्तः शत्रुजिच्छत्रुतापनः ॥१९॥

अभिन्न स्वरूप योगिजनों के रमण स्थान एवं सभी को रमण कराने वाले और स्वयं भी सभी में रमण करनेवाले जप करनेवालों को ऐहिक भोगों के साथ सायुज्य मुक्तिदाता श्रीरामजी । **रामचन्द्रः**=साधकों को चतुर्वर्ग फल **च**=और चन्द्रमा के समान शीतलता को भी देनेवाले। **रामभद्रः**=वात्सल्यस्वरूप साधक-जापकों को कल्याण **च**=एवं मुक्ति प्रदान करनेवाले । **शाश्वतः**=कभी विकृत या परिवर्त्तित न होनेवाले नित्य । **राजीव-लोचनः**=कमल के समान मन मोहक नेत्रवाले । **श्रीमान्**=ऐश्वर्य शोभा या उत्पत्ति प्रलय अगति गति विद्या एवं अविद्यारूप षडैश्वर्य वाले । **राजेन्द्रः**=सभी राजाओं में श्रेष्ठ । **रघुपुङ्गवः**=रघुकुल में उत्पन्न हुये सभी पुरुषों में श्रेष्ठ ॥१८॥

जानकीवल्लभः=श्रीजानकीजी के प्रिय । **जैत्रः**=सभी को जीतनेवाले । **जितामित्रः**=अमित्रों या शत्रुओं को जीत लिया है जिन्होंने ऐसे । **जनार्दनः**=दुष्टजनों को दमन करनेवाले । **विश्वामित्रप्रियः**=महर्षि विश्वामित्र के अति प्रिय। **दान्तः**=इन्द्रिय दमनशील या सभी को वश में रखनेवाले । **शत्रुजित्**=शत्रुओं को जितनेवाले । **शत्रुतापनः**=शत्रुओं को सन्तप्त करनेवाले ॥१९॥

वालिप्रमथनो वाग्मी सत्यवाक् सत्यविक्रमः ।
सत्यव्रतो व्रतधरः सदा हनुमदाश्रितः ॥२०॥
कौसल्येयः खरध्वंसी विराधवधपण्डितः ।
विभीषणपरित्राता दशग्रीवशिरोहरः ॥२१॥
सप्ततालप्रभेत्ता च हरकोदण्डखण्डनः ।
जामदग्न्यमहादर्पदलनस्ताटकान्तकृत् ॥२२॥

वालिप्रमथनः=वालिका वध करनेवाले । **वाग्मी**=प्रशस्त वहुत या धर्मयुक्त वात वोलनेवाले । **सत्यवाक्**=सत्य वाणी वाले । **सत्यविक्रमः**=सत्य के विषय में ही पराक्रम करनेवाले । **सत्यव्रतः**=सत्य व्रत यानी स्वीकृत नियम को कभी नहीं छोड़नेवाले । **व्रतधरः**=व्रत नियम का धारण करनेवाले । **सदाहनुमदाश्रितः**=सर्वदा श्रीहनुमानजी से आश्रित-सभी काल में श्रीहनुमानजी से सेवित ॥२०॥

कौसल्येयः=श्रीकौसल्याजी के पुत्र । **खरध्वंसी**=खर राक्षस को मारनेवाले । **विराधवधपण्डितः**=विराध राक्षस का वध करने में चतुर । **विभीषणपरित्राता**=श्रीविभीषणजी की रक्षा करनेवाले । **दशग्रीवशिरोहरः**=रावण के मस्तकों का हरण-काटनेवाले ॥२१॥

सप्ततालप्रभेत्ता=सात ताल वृक्ष का एक ही वाण से भेदन करनेवाले, **च**=और उसी वाण से पर्वत एवं पृथिवी के सात तह को विदीर्ण करनेवाले । **हरकोदण्डखण्डनः**=श्रीशंकरजी के धनुष को तोडनेवाले । **जामदग्न्यमहा-**

वेदान्तसारो वेदात्मा भवरोगस्य भेषजम् ।

दूषणत्रिशिरोहन्ता त्रिमूर्तिस्त्रिगुणात्मकः ॥२३॥

त्रिविक्रमस्त्रिलोकात्मा पुण्यचारित्रकीर्तनः ।

त्रिलोकरक्षको धन्वी दण्डकारण्यपावनः ॥२४॥

दर्पदलनः=श्रीपरशुरामजी के महान् घमण्ड को दलित करनेवाले । **ताटकान्तकृत्**=ताडका राक्षसी का वध करनेवाले ॥२२॥

वेदान्तसारः=वेदान्त-उपनिषद्-ब्रह्मसूत्रों के सारत्त्व स्वरूप । **वेदात्मा**=वेद आत्मा वाले । **भवरोगस्य भेषजम्** संसार रूप रोग के औषध । **दूषणत्रिशिरोहन्ता**=दूषण एवं त्रिशिरा नाम के राक्षसों को मारनेवाले । **त्रिमूर्तिः**= ब्रह्मा विष्णु एवं महेस रूप तीन मूर्ति-शरीरवाले। **त्रिगुणात्मकः**=सत्व रज एवं तम रूप तीन गुण स्वरूप वाले ॥२३॥

त्रिविक्रमः=तीनों लोकों में व्याप्त पराक्रम वाले, या तीनों गुणों को संनियत करनेवाले अथवा तीनों लोकों में पादविन्यास करनेवाले वामनरूप **श्रीराम** । **त्रिलोकात्मा**= तीनों लोकों स्वर्ग मर्त्य एवं पाताल के आत्मा रूप । **पुण्यचारित्रकीर्तनः**=पुण्यचारित्र के रूप में कीर्त्तन किये जानेवाले । **त्रिलोकरक्षकः**=तीनों लोकों का रक्षक । **धन्वी**=धनुषधारण करनेवाले । **दण्डकारण्यपावनः**= दण्डकारण्य को पवित्र करनेवाले ॥२४॥

अहल्याशापशमनः पितृभक्तो वरप्रदः ।
जितेन्द्रियोजितक्रोधोजितशत्रुर्जगद्गुरुः ॥२५॥
ऋक्षवानरसंघाती चित्रकूटसमाश्रयः ।
जयन्तप्राणवरदः सुमित्रापुत्रसेवितः ॥२६॥
सर्वदेवाधिदेवश्च मृतवानरजीवनः ।
मायामारीच हन्ता च महादेवो महाभुजः ॥२७॥

अहल्याशापशमनः=अहल्याजी के शाप को नाश करनेवाले । **पितृभक्तः**=माता पिता के भक्त-आज्ञा पालक। **वरप्रदः**=अपने आराधकों को इच्छित वर देनेवाले। **जितेन्द्रियः**=इन्द्रिय को जितनेवाले । **जितक्रोधः**=क्रोध को जितनेवाले । **जितशत्रुः**=शत्रु को जितनेवाले। **जगद्गुरुः**=तीनों लोक एवं चौदह भुवन के गुरु-सभी को सनातन मर्यादा की शिक्षा देनेवाले ॥२५॥

ऋक्षवानरसंघाती=भालू एवं वन्दरों के समूह वाले या उनसे सेवित । **चित्रकूटसमाश्रयः**=चित्रकूट में निवास करनेवाले । **जयन्तप्राणवरदः**=जयन्त के प्राण के रक्षा करनेवाले । **सुमित्रापुत्रसेवितः**=श्रीसुमित्राजी के पुत्र श्रीलक्ष्मणजी से सेवित ॥२६॥

सर्वदेवाधिदेवः=सभी देवताओं के अधिदेव-विशेष देवता यानी सभी देवों से सदा आराधनीय देवता । **च**=और **मृतवानरजीवनः**=संग्राम में मरे वानरों को जीवित करनेवाले। **मायामारीचहन्ता**=मायावीमारीच का

सर्वदेवस्तुतः सौम्यो ब्रह्मण्यो मुनिसंस्तुतः ।
महायोगी महोदारः सुग्रीवेप्सितराज्यदः ॥२८॥
सर्वपुण्याधिकफलः स्मृत्या सर्वाघनाशनः ।
आदिदेवो महादेवो महापुरुष एव च ॥२९॥

वध करनेवाले । **च**=एवं मायावी सुवाहु को मारनेवाले । **महा देवः**=सभी देवों से बड़े देवता । **महाभुजः**=बड़े बड़े हाथवाले२७

सर्वदेवस्तुतः=ब्रह्मा विष्णु शिव प्रभृति सभी देवों से संस्तुत-संप्रार्थित । **सौम्यः**=आकर्षक सरल स्वभाव वाले । **ब्रह्मण्यः**=वेदों के ज्ञाता एवं ब्राह्मणों का कल्याण करनेवाले । **मुनिसंस्तुतः**=श्रीवशिष्ठ विश्वामित्रादि ब्रह्मर्षियों से सतत संस्तुत स्तुति किये गये । **महायोगी**=सर्वाधिक योग साधक बड़े योगी । **महोदारः**=सर्वस्व देनेवाले महान् उदार वृत्ति के लोकोत्तर पुरुष । **सुग्रीवेप्सितराज्यदः**= सुग्रीव से अभिलषित राज्य को देनेवाले ॥२८॥

सर्वपुण्याधिकफलः=साधकों को अन्य सभी पुण्यों से प्राप्त होनेवाले फल से भी अधिक फल देनेवाले । **स्मृत्यासर्वाघनाशनः**=श्रीरामनाम स्मरण मात्र से सभी अघ-पापों का नाश करदेनेवाले । **आदिदेवः**=जिससे पर दूसरा नहीं है ऐसे सर्व से आदि पहले देवता । **महादेवः**= सभी शरणम्पन्नों को सायुज्य मुक्तिरूप महान फल प्रदाता सर्वोत्कृष्टदेव । **च**=एवं **महापुरुषः**=पुरुष शब्द से वेद में वर्णित सर्वोत्कृष्ट परपुरुष **एव**=ये ही हैं अन्य नहीं ॥२९॥

पुण्योदयो दयासारः पुराणपुरुषोत्तमः ।
स्मितवक्त्रोमितभाषी पूर्वभाषी च राघवः ॥३०॥
अनन्तगुणगम्भीरो धीरोदात्तगुणोत्तमः ।
मायामानुषचारित्रो महादेवादिपूजितः ॥३१॥

पुण्योदयः=उपासना करनेवालों का पुण्यों के कल्याणों के उदय कर देनेवाले । **दयासारः**=दया के सार कृपा के अन्तिम तत्त्वरूप । **पुराणपुरुषोत्तमः**=आदि पुरुषों में श्रेष्ठ-सर्वोत्तमपुरुष । **स्मितवक्त्रः**=मन्दमुस्कान युक्त मुहवाले । **मितभाषी**=सत्यसंरक्षणार्थकम पर तथ्य पूर्ण वोलनेवाले । **पूर्वभाषी**=वेदादि शास्त्रों के उपदेश द्वारा सवसे प्रथम उपदेश देनेवाले । **च**=एवं । **राघवः**=जीव वर्गों के स्वामी या रघुकुल में उत्पन्न ॥३०॥

अनन्तगुणगम्भीरः=असंख्यगुणों के सागर होते हुये भी अतिगम्भीर स्वरूप वाले । **धीरोदीत्तगुणोत्तमः**=धीर एवं उदान्त-श्रेष्ठ गुणवालों में अति उत्तम यानी 'विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः' विकार का कारण सामने होने पर भी जिसका चित्त विकृत न हो वेही धीर हैं इस सूक्ति के अनुसार किसी भी स्थिति में धर्म से च्युत न होने वाले उत्कृष्ट गुणों के खजाने । **मायामानुषचारित्रः**=अपनी दैवी माया से मनुष्य सम्बन्धि सामान्य चरित्र करनेवाले । **महादेवादिपूजितः**=श्रीशंकर विष्णु ब्रह्मा इन्द्र प्रभृति सभी देवों से पूजित ॥३१॥

सेतुकृज्जितवारीशः सर्वतीर्थमयो हरिः ।

श्यामाङ्गः सुन्दरः शूरः पीतवासा धनुर्धरः ॥३२॥

सर्वयज्ञाधिपो यज्वा जरामरणवर्जितः ।

सत्यधर्मप्रतिष्ठाता सर्वावगुणवर्जितः ॥३३॥

परमात्मा परंब्रह्म सच्चिदानन्दविग्रहः ।

परं ज्योतिः परं धाम पराकाशः परात्परः ॥३४॥

सेतुकृत्=समुद्र में पुल बांधने वाले । **जितवारीशः**=समुद्र को जीतनेवाले । **सर्वतीर्थमयः**=सम्पूर्णतीर्थ स्वरूप दिव्य शरीर वाले । **हरिः**=शरणागत सभी जीवों के कष्टों का हरण करनेवाले । **श्यामाङ्गः**=मेघ के समान श्याम अंग वाले । **सुन्दरः**=दर्शकों के चित्त को मोहित करनेवाले अत्यन्त आकर्षक । **शूरः**=किसी से पीछे हठ न करनेवाले परम वीर । **पीतवासा**=पीले वस्त्र पहनने वाले । **धनुर्धरः**=त्रिभुवन विजयी धनुष को धारण करनेवाले ॥३२॥

सर्वयज्ञाधिपः=सभी प्रकार के यज्ञों के अधिपति । **यज्वा**=यज्ञ करनेवाले । **जरामरणवर्जितः**=बूढ़ापा एवं मृत्यु से रहित काल धर्म से पर परपुरुष । **सत्यधर्मप्रतिष्ठाता**=सत्य एवं सनातन धर्म को प्रतिष्ठापित करनेवाले । **सर्वावगुणवर्जितः**=समस्त अवगुणों से रहित ॥३३॥

परमात्मा=जड़चेतन सभी के अन्तर्यामी के रूप में स्थित परात्पर तत्त्व । **परंब्रह्म**=योगि लोगों के रमणस्थल श्रीराम पद से कथित परात्पर ब्रह्म । **सच्चिदानन्दविग्रहः**=

परेशः पारगः पारः सर्वदेवात्मकः प्रभुः ।
इति श्रीरामचन्द्रस्य नाम्नामष्टोत्तरंशतम् ॥३५॥

सत् चित् एवं आनन्दरूप शरीर वाले । **परं ज्योतिः**=स्थावर जंगम सभी को प्रकाशित करनेवाली परम दिव्य प्रकाशवाले । **परंधाम**=वेद संहिता आदि शास्त्रों में वर्णित परम दिव्यधाम-सभी के आश्रयस्थान । **पराकाशः**=सभी भूत वर्गों को अपने में समाश्रित करनेवाले सर्वोत्कृष्ट अवकाश स्थान वाले । **परात्परः**= शास्त्रों में पररूप से वर्णित श्रीनारायणजी से पर श्रीकृष्णजी हैं उनसे परात्पर रूपसे स्थित सर्वनियन्ता एवं सर्वाधार "**परान्नारायणाच्चैव कृष्णात्परतरादपि । यो वै परतमः श्रीमान् रामोदाशरथिः स्वराट्**" इस प्रकार आगम शास्त्र श्रीरामजी का वर्णन करता है अत श्रीरामचन्द्रजी सभी से पर हैं उनसे पर-उत्कृष्ट दूसरा कोई नहीं हैं ॥३४॥

परेशः=समस्त जीव वर्ग के परम ईश स्वामी नियन्ता। **पारगः**=सभी धर्मादि तत्त्वों के पारगामी मर्मज्ञ या शरणापन्न समस्त जीव वर्गों को पार लेजाने वाले । **पारः**=स्थावर जंगमात्मक लीलाविभूति के समस्त तत्त्वों से उस पार नित्य विभूति या त्रिपाद विभूति दिव्यधाम श्रीसाकेत में विराजमान । **सर्वदेवात्मकः**=ब्रह्मा विष्णु शंकर प्रभृति सभी देवताओं के आत्मा-अन्तर्यामी के रूप में रहकर उन उन कार्यों में प्रेरित करनेवाले । **प्रभुः**=सृष्टि

गुह्याद्गुह्यतरं देवि ? तव स्नेहात्प्रकीर्तितम् ।
यः पठेच्छृणुयाद्वापि भक्तियुक्तेन चेतसा ॥३६॥
सर्वैः प्रमुच्यते पापैः कल्पकोटिसमुद्भवैः ।
जलानि स्थलतां यान्ति शत्रवोयान्ति मित्रताम् ॥३७॥
राजानो दासतां यान्ति वह्नयो यान्ति शीतताम् ।
आनुकूल्यं च भूतानि स्थैर्यं यान्ति चलाः श्रियः ॥३८॥

स्थिति एवं संहार प्रभृति सभी कार्यों को स्वेच्छया अनायास ही सम्पादन करनेवाले स्वतः सर्व समर्थ श्रीरामजी । श्रीमहादेवजी कहते हैं हे पार्वति ? ये पूर्व कथित श्रीरामचन्द्रजी के एकसौ आठ नाम हैं ॥३५॥

हे देवि ? ये पूर्व वर्णित नाम गुह्य से भी गुह्य-अत्यन्त गोपनीय हैं तेरे श्रीरामनाम विषयक स्नेह को देखकर वर्णन किया हूँ इन नामों का भक्ति पूर्वक एकान्तचित्त से जो पाठ करेगा या श्रवण करेगा वह-॥३६॥

कोटि कल्पों से एकत्रित सभी पापों से मुक्त हो जायगा एवं पाठ करनेवाले के लिये जल स्थान स्थल के रूप में परिणत हो जायगा तथा शत्रु वर्ग भी मित्र के रूप में व्यवहार करने लग जायेंगे ॥३७॥

इन श्रीरामनाम पाठ कर्ता के राजा लोग भी दास हो जाते हैं एवं सभी प्रकार के अग्नि शीतल हो जाते हैं तथा भूत प्राणि वर्ग भी अनुकूल हो जाते हैं और चंचल श्री ऐश्वर्य भी स्थिर होकर रहने लग जाती है ॥३८॥

अनुग्रहं ग्रहा यान्ति शान्तिमायान्त्युपद्रवाः ।
पठतो भक्तिभावेन नरस्य गिरिसम्भवे ? ॥३९॥
यः पठेत् परया भक्त्या तस्य वश्यं जगत्त्रयम् ।
यं यं प्रकुरुते कामं तं तमाप्नोति कीर्तनात् ॥४०॥
कल्पकोटि सहस्त्राणि कल्पकोटिशतानि च ।
वैकुण्ठे मोदते नित्यं दशपूर्वैर्दशापरैः ॥४१॥

हे पर्वतपुत्रि ? अति भक्ति भावना से इस अष्टोत्तर शतनाम के पाठ करनेवाले मनुष्य के विरुद्ध ग्रह अनुग्रह करनेवाले हों जाते हैं एवं विविध प्रकार के उपद्रव भी शान्त हो जाते हैं ॥३९॥

जो साधक परम भक्ति के साथ नित्य इस स्तोत्र का पाठ करता है तीनों जगत् उसके वश हो जाता है एवं जिस जिस कामना की पूर्ति की इच्छा रखता है श्रीरामनाम संकीर्तन से उस उस कामना की पूर्ति अवश्यं ही करलेता है ॥४०॥

जो इन अष्टोत्तर शतनामों का नित्य साधना करता हो तो वह साधक अपने दश पीढी पूर्व एवं दश पीढी पर के परिवार के साथ सौ कोटि या हजार कोटि कल्प तक वैकुण्ठ-श्रीअयोध्या में सानन्द निवास करता है ॥४१॥

रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम् ।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्नते संसारिणोजनाः ॥४२॥
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥४३॥
इमं मन्त्रं महादेवि ? जपन्नेव दिवानिशम् ।
सर्वपापविनिर्मुक्तो विष्णुसायुज्यमाप्नुयात् ॥४४॥

जो दूब के पत्ते के समान श्याम वर्ण वाले एवं कमल के समान आँख वाले और पीले वस्त्र पहने हुये श्रीरामजी की पूर्व वर्णित १०८ दिव्य नामों से नियत रूपसे स्तुति करते हैं वे साधक जन संसारी नहीं हैं यानी मुक्त हो जाते हैं ॥४२॥

सर्व जीवों में रमण शील श्रीरामजी को नमस्कार है मंगल रूप श्रीरामजी को नमस्कार है सभी शरणागत जीवों के त्रिविध-दैहिक दैविक एवं भौतिक तापों को दूरकर शीतलता व शान्ति प्रदायक श्रीरामजी को नमस्कार है जगत् के सृष्टि कर्ता श्रीरामजी को नमस्कार है रघुकूल के आश्रयभूत श्रीरामजी को नमस्कार है सभी अनाथों के नाथ आश्रय-रक्षक जीवों के एक मात्र रक्षक श्रीरामजी को नमस्कार है करुणा मूर्ति सर्वाधारभूता श्रीसीताजी के आधार श्रीरामजी को नमस्कार है ॥४३॥

हे महादेवि ? पूर्व कथित अष्टोत्तरशतनामों का जप में

श्रीव्यास उवाच

इति ते रामचन्द्रस्य माहात्म्यं वेदसम्मितम् ।
कथितं तव गाङ्गेय ? यतस्त्वं वैष्णवोत्तमः ॥४५॥

इति पद्मपुराणे षट्पञ्चाशत्साहस्थ्रां संहितायां पातालखण्डे श्रीरामाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम्

यदि असमर्थ हो तो इस **'रामाय'** आदि मन्त्र को ही रातदिन जप करनेवाला साधक सभी प्रकार के पापों से विमुक्त होकर श्रीरामसायुज्य को प्राप्त कर लेता है जिसको प्राप्तकर पुनर्जन्म नहीं होता है ॥४४॥

श्रीव्यासजी कहते हैं हे गांगेय ? पूर्व वर्णित श्रीरामचन्द्रजी के अष्टोत्तरशतनामों का विशिष्ट महत्त्व जो कि वेद सम्मत है-वेदों में विशद रूप से वर्णित है उसे तुम्हे सुना दिया क्योंकि तुम वैष्णवों में श्रेष्ठ हो श्रीराम रहस्य को सुनने के अधिकारी हो अतः कहा अन्य कोई अवैष्णव-वैष्णवी दीक्षा हीन इसका अधिकारी नहीं ॥४५॥

आनन्दभाष्यसिंहासनासीन जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्य

श्रीरामेश्वरानन्दाचार्य

प्रणीत प्रकाश

卐 श्रीरामः शरणं मम 卐